(64) 21-1-73 (60)

21-1-73.

करनी चाहिए। भारत स्वर्ग था तो सभी सर्वगुण सम्पन्न ...थे। 5000 वर्ष की बात है। तो परमात्मा की महिमा सभी से न्यारी है। फिर है देवताओं की महिमा। इसमें अन्धश्रधा की तो बात ही नहीं। यहाँ तो सभी बच्चे हैं। फालोअर्स नहीं हैं। यह तो फैमली है। हम ईश्वर के फैमली हैं। असल में तो हम सभी आत्माएँ परम पिता परमात्मा के बच्चे हैं तो फैमली हुई ना। वह हुये निराकार। फिर साकार में आते हैं। इस समय यह वन्डरफुल फैमली है। इसमें संशय की तो बात ही नहीं। शिव के सभी सन्तान हैं। प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान भी गाये हुये हैं। हम ब्रह्माकुमार कुमारियाँ हैं। नई सृष्टि की स्थापना हो रही है। पुरानी सृष्टि सामने है। पहले तो बाप की पहचान देनी है। ब्रह्मावंशी बनने बिगर बाप का वरसा मिल न सके। ब्रह्मा के पास यह ज्ञान नहीं है। ज्ञान सागर वह बाबा है। वरसा हम बाबा से पाते हैं। हम हैं मुखवंशावली। सभी राजयोग सीख रहे हैं। यह दादा खुद भी पढ़ते हैं। हम सभी को पढ़ाने वाला इस ब्रह्मा के तन में आकर पढ़ाते हैं। यह प्रजापिता ब्रह्मा जो अव्यक्त है वह जब सम्पूर्ण बन जाते, पाप कट जाते तब फिरश्ता बन जाता है। सूक्ष्म वतनवासियों को फरिश्ता कहा जाता है। वहाँ हड्डी मांस नहीं रहता। बच्चियाँ सा० भी करती है। बाप कहते हैं भक्तिमार्ग में अल्प काल का सुख भी मेरे द्वारा मिलता है। दाता मैं एक ही हूँ। इसलिये ईश्वर अर्पण करते हैं। समझते हैं ईश्वर ही फल देते हैं। साधु सन्त आदि का कब नाम नहीं लेते हैं। देने वाला एक बाप है। कर के निमित कोई द्वारा दिलाते हैं उनकी महिमा बढ़ाने लिये। वह है सभी अल्प काल का सुख, यह है बेहद का सुख। नये2 बच्चे आते हैं तो समझते हैं जिस मत पर हम थे उन्हों को फिर यह नालेज समझावें गुरु को समझावें। बाप ने भी कहा है नाइन गुरुओं आदि सभी को छोड़ो। यह गुरु लोग तार नहीं सकते। बाकी तारने वाला सद्गुरु एक ही है। डुबाने वाले अनेक हैं। सभी माया के मत पर हैं। यहाँ तो तुमको ईश्वरीय मत मिलती है यह मत आधा कल्प तक चलती है क्योंकि सतयुग त्रेता में हम इसकी प्रारब्ध भोगते हैं। वहाँ उल्टी मत होती नहीं। क्योंकि माया ही नहीं। उल्टी मत तो बाद में शुरू होती है। अभी बाबा हमको आप समान त्रिकालदर्शी त्रिलोकीनाथ बनाते हैं। ब्रह्माण्ड के मालिक भी बनते हैं फिर सृष्टि के मालिक भी बनते। तो त्रिलोकीनाथ क्यों नहीं कहला सकते हैं। बाप ने बच्चों की महिमा अपने से भी उच्च की है। ऐसा बाप कब देखा सारी सृष्टि में। जो बच्चों पर इतनी मेहनत करे और अपने से भी तीखा बनावे। कहते हैं तुम बच्चों को विश्व की बादशाही देता हूँ मैं नहीं भोगता हूँ। बाकी दिव्य दृष्टि की चाबी अपने हाथ में रखता हूँ। भक्तिमार्ग में मुझे काम आती है। अभी भी ब्रह्मा का सा० कराता हूँ कि इस ब्रह्मा के पास जाकर राजयोग सीखो भविष्य प्रिन्स बनो। यह तो बहुतों को सा० होता है। प्रिन्स तो सभी ताज सहित होते हैं। बाकी बच्चों को यह पता नहीं पड़ता कि सूर्यवंशी प्रिन्स का सा० हुआ वा चन्द्रवंशी प्रिन्स का। जो बाबा के बच्चे बन हैं वह प्रिन्स तो जरूर बनेंगे फिर आगे वा पीछे। अच्छा पुरुषार्थ होगा तो सूर्यवंशी बनेगा। नहीं तो चन्द्रवंशी। तो सिर्फ प्रिन्स को देखकर खुश नहीं होना है। सभी पुरुषार्थ पर मदार रखता है। बाबा तो हर बात क्लीयर कर समझाते हैं। अन्धश्रधा की बात ही नहीं। यह तो है ईश्वरीय फैमली। इस हिसाब से तो वह भी ईश्वरीय सन्तान हैं। परन्तु वह कलियुग में है तुम संगम पर हो। किसके पास भी जाओ बोलो हम शिववंशी ब्रह्मामुख वंशावली हैं। ब्रह्मामुखवंशावली ब्राह्मण ही स्वर्ग का वरसा पा सकते हैं। किसको अच्छी रीत समझाने की मेहनत करनी पड़ती है। 5 व 5100 को समझावें तब उनसे कोई निकले (जिसके तकदीर में होगा वह कोटों में कोई निकलेगी। आप समान बनाने में टाईम लगता है। बाकी हाँ साहूकार का आवाज अच्छा होता है। मिनिस्टर पास जाते हैं तो वह भी पूछते हैं आप के पास और सभी मिनिस्टर्स आते हैं? तो सुनाते हैं हाँ आते हैं। तो कहेंगे अच्छा हम भी चलते हैं। बाप तो कहते मैं बिल्कुल साधारण हूँ। तो साहुकार कोई विरले आते हैं। आते हैं परन्तु अन्त में। फिर भी यह बड़ी पाण्डव गवर्मेन्ट है। यह शुद्र गवर्मेन्ट पास अपन को रजिस्टर करावे ऐसे हो नहीं सकता। बाबा कहते हैं हम तो शिव भोला भण्डारी हैं। हमको यह कंगाल गवर्मेन्ट क्या मदद करेगी। हम तो इस गवर्मेन्ट को कौड़ी से हीरे जैसा बनाते हैं। तो ऐसे फिकर गवर्मेन्ट के पास अपन को रजिस्टर कराना शोभता नहीं। कौरवों के अन्दर पाण्डव गवर्मेन्ट कैसे रह सकती। नशा रहना चाहिए। उन्हों को समझाना है हम भारत की तन मन धन से सेवा करते हैं।) अच्छा बच्चों को याद प्यार गुडमार्निंग।